संघनित पाठ्यपुस्तक

हिंदी

कक्षा स्तर : 3–5

आयु वर्ग अनुसार प्रवेशित विद्यार्थियों हेतु

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रथम संस्करण

पेपर उपयोग :

प्रकाशक :

मुद्रक:

मूल्य :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोग:
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

आमुख

राज्य में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम अप्रेल 2010 से लागू हो चुका है। उक्त अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराना राज्य सरकार का दायित्व है तथा शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को कक्षा के अनुरूप सीखने के समान स्तर पर लाने हेतु विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था कराना आवश्यक है। इसी उद्देश्य से राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु इन संघनित पाठ्यपुस्तकों को तैयार किया है। इन पुस्तकों को तैयार करते समय पिछली कक्षाओं के पाठ्यक्रम तथा दक्षताओं का ध्यान रखा गया है।

5 से 6 साल की उम्र होने पर बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ करते हैं। वर्षों से स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम आयु और कक्षाओं की निश्चित संगति के अनुसार बनाए जाते रहे हैं। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के संदर्भ में हमारे स्कूलों में ऐसे बच्चे प्रवेश ले रहे हैं जो स्कूली शिक्षा प्रारम्भ करने की सामान्य आयु से 2 से 7 वर्ष तक बड़ी आयु के हो सकते हैं। इन बच्चों को आयु के अनुसार सीधे ही आयु अनुरूप कक्षा में नामांकित किया जाएगा। इन बालकों का भाषाई कौशल व व्यावहारिक ज्ञान आरंभिक कक्षाओं के सामान्य बच्चों से उच्चतर होता है। इसी धारणा को ध्यान रखते हुए इन बच्चों के लिए विभिन्न विषयों की पाठ्यसामग्री तैयार की गई। अपेक्षा यह है कि बच्चे एक पुस्तक में सम्मिलित अवधारणाओं–कौशलों को अपनी आयु एवं स्तर के अनुसार 3 से 6 माह की अवधि में अर्जित कर सकेंगे। इससे उनकी सीखने की गति भी बढ़ेगी।

प्रस्तुत पुस्तक को सर्वांग परिपूर्ण बनाने का पूरा–पूरा प्रयास किया गया है। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.), उदयपुर इस पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राजस्थान पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों के संपादकों, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है। हमारे पर्याप्त प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्थान आदि का नाम छूट गया हो तो हम उनके भी आभारी हैं।

पाठ्यपुस्तक की गुणवत्ता की अभिवृद्धि के लिए श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव स्कूल शिक्षा, डॉ जोगाराम, आयुक्त राजस्थान प्रारंभिक शिक्षा परिषद्, जयपुर, निदेशक

प्रारंभिक एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान सरकार का मार्गदर्शन संस्थान को सतत प्राप्त होता रहा है। एतदर्थ संस्थान आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से हुआ है जिसके लिए संस्थान आभारी है।

मुझे आशा है कि राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर द्वारा तैयार कराई पाठ्यसामग्री शिक्षा से वंचित वर्ग के बालक–बालिकाओं में कक्षानुसार दक्षता विकसित करने में तथा उन्हें शिक्षा की मुख्यधारा में जोड़ने में उपयोगी सिद्ध होगी।

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक : रूक्मणि रियार, निदेशक, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

सह संरक्षक : सुभाष शर्मा, विभागाध्यक्ष, शिक्षाक्रम एवं मूल्यांकन विभाग

मुख्य समन्वयक : वनिता वागरेचा, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

समन्वयक : वनिता वागरेचा, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

सह समन्वयक : डॉ. विमलेश कुमार पारीक, अध्यापक, रा.मा.वि., ढींढा, दूदू, जयपुर

लेखकगण : डॉ. सुजाता शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.बा.उ.मा.वि., खंडार, सवाईमाधोपुर

डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत, प्रधानाचार्य, रा.आ.उ.मा.वि., ड्योढ़ी, जयपुर

अंजलि कोठारी, व्याख्याता, डाइट, उदयपुर

सीताराम शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., लूलवा, मसूदा, अजमेर

डॉ. मूलचंद बोहरा, उपनिदेशक, आर.टी.ई., प्रा.शिक्षा निदेशालय, बीकानेर

डॉ. मदन गोपाल लढा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., लूणकरनसर, बीकानेर

यशोदा दशोरा, ए.बी.ई.ओ, कार्यालय जि.शि.अ., प्रा.शि., उदयपुर

डॉ. कृष्णकांत चौहान, अध्यापक, रा.उ.मा.वि., लकापा, सलूम्बर, उदयपुर

तोषी सुखवाल, अ., के.जी.बी.वी., मावली, उदयपुर

आवरण एवं सज्जा : डॉ. जगदीश कुमावत, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

राजाराम व्यास, व्याख्याता (संविदा), एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

तकनीकी सहयोग : हेमन्त आमेटा, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : सीमा प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, उदयपुर

शिक्षकों से...

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण प्रक्रियाओं में विद्यार्थी केन्द्र के रूप में है तथा प्रत्येक बालक महत्वपूर्ण है। उक्त अधिनियम के अनुसार 6 से 14 वर्ष के बालक–बालिकाओं को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध करवाना राज्य सरकार का दायित्व है; साथ ही वंचित बालक–बालिकाओं को समान स्तर पर लाने हेतु विशेष प्रयास करना आवश्यक है।

इसी विशेष प्रयास की कड़ी में शिक्षा से वंचित बालक–बालिकाओं को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु संघनित पाठ्यसामग्री तैयार की गई है।

आमतौर पर बच्चे 5–6 वर्ष की आयु में औपचारिक शिक्षा प्रारंभ करते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं, लेकिन अधिनियम की धारा 25 के तहत विद्यालयों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी आयु के अनुसार सीधे ही बड़ी कक्षाओं में प्रवेश पा रहे हैं। बड़ी उम्र होने के कारण इन बच्चों की मानसिक योग्यता, भाषाई कौशल, व्यावहारिक ज्ञान आदि आरंभिक कक्षाओं के सामान्य बच्चों से उच्चतर है। फिर भी पढ़ना–लिखना सीखने के लिए पठन–लेखन की दक्षताओं के माध्यम से विषय के अध्ययन हेतु कौशल अर्जित करने के लिए उन्हें एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम पर कार्य करने की आवश्यकता है। उनकी उच्चतर भाषायी क्षमता और परिवेशीय अनुभव के आधार पर यह कार्य अधिक सारपूर्ण एवं त्वरित गति से सम्पन्न किया जा सकता है। इन्हीं संभावनाओं व धारणाओं को ध्यान रख कर हिन्दी भाषा की पुस्तकें विशेष पाठ्यसामग्री के रूप में तैयार की गई है।

पुस्तकों का विभाजन संघनित पाठ्यपुस्तक कक्षा स्तर 1 व 2, कक्षा स्तर 3, कक्षा स्तर 3 से 4, कक्षा स्तर 3 से 5, कक्षा स्तर 3 से 6, कक्षा स्तर 3 से 7 के अनुरूप किया गया है। जिनका शिक्षक बच्चे की आधाररेखा आकलन करने पर प्राप्त स्तर के अनुरूप शिक्षण के दौरान उपयोग कर सकेंगे। उक्त पुस्तकों में राज्य सरकार द्वारा निर्धारित कक्षावार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य एवं गतिविधियों को सम्मिलित व व्यवस्थित करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति व स्तर भिन्न–भिन्न होते हैं लेकिन यह अपेक्षा की गई है कि प्रत्येक पुस्तक में सम्मिलित अवधारणाओं–कौशलों को 3 से 6 माह में अर्जित कर सकेंगे।

इन पुस्तकों की विषयवस्तु एवं प्रसंग बच्चों के सामान्य परिवेश से लिए गए हैं। प्राकृतिक परिघटनाएँ, पशु–पक्षी, सामाजिक चेतना, साँस्कृतिक गौरव, मूल्यों का विकास, स्वास्थ्य, देश–प्रेम, संवेदनशीलता आदि को सम्मलित किया गया है। विविधताओं को समेटने हेतु विषयगत एवं विधागत दोनों रूपों के समावेश का प्रयास है। साथ ही साथ जीवंत चित्रों के माध्यम से समस्त पाठ्यसामग्री को सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास भी किया गया है।

चूँकि ये बच्चे बोली में भाषाई समझ व कौशलों से संपन्न होते हैं; लेकिन हिंदी की मानक शब्दावली, उनके वर्ण–ध्वनियों के सटीक उच्चारण व वाक्य संरचनाओं के लिखित रूप से अपरिचित होते हैं। अतः पुस्तकों में पाठों की संख्या सीमित रखी गई है और उक्त कौशलों के संवर्धन हेतु लेखन–पठन की क्षमता वाली गतिविधियों का समावेश अधिक किया गया है।

पुस्तकों पर काम करने के दौरान बच्चों का मूल्यांकन सतत् एवं व्यापक होगा। इसके लिए राज्य में प्रचलित मूल्यांकन के दस्तावेजों को संधारित किया जाना अपेक्षित है। इसके माध्यम से शिक्षक सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही बच्चे के सीखने की स्थिति, प्रगति एवं आवश्यकताओं का समुचित आकलन कर योजना तैयार करते हुए कार्य कर पाएँगे।

इस पाठ्यसामग्री को उक्त बच्चों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल की तरह विकसित किया गया है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में विभिन्न स्तर के बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं, इस हेतु भी यह पाठ्यसामग्री उसके कार्य को सहज एवं व्यवस्थित करने में मदद करेंगी।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	पाठ का शीर्षक	विधा	पृष्ठ संख्या
1.	देश की माटी	कविता	1–3
2.	मीठे बोल	कहानी	4–7
	बड़ा बनने की कला	पढ़ने के लिए	8
3.	हमें जलाशय लगते प्यारे	कविता	9–12
4.	झीलों की नगरी	निबंध	13–18
5.	आज मेरी छुट्टी है	एकांकी	19–23
	चित्रकथा	पढ़ने के लिए	24–25
6.	किताबें	कविता	26–28
7.	नारी शक्ति का प्रतीक– भगिनी निवेदिता	जीवनी	29–33
8.	हुदहुद	वर्णन	34–38
	तीन बन्दर	पढ़ने के लिए	39
	विलोम शब्द सीढ़ी		40

1 देश की माटी

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल ।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

देश के घर और देश के घाट।
देश के वन और देश के बाट।
सरल बनें प्रभु, सरल बनें।।

देश के तन और देश के मन।
देश के घर के भाई–बहन।
विमल बनें प्रभु, विमल बनें।।

देश की इच्छा, देश की आशा।
देश की शक्ति, देश की भाषा।
एक बनें प्रभु, एक बनें।।

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

निर्देश–भारत देश की विशेषताओं पर चर्चा करें। कविता को सस्वर गाएँ और गवाएँ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

सरस	–	रसवाला, मोहक, अच्छा
घाट	–	तट के आस–पास का सीढ़ीदार स्थान
बाट	–	रास्ता
विमल	–	निर्मल, स्वच्छ

उच्चारण के लिए

प्रभु, देश, भाई–बहन, इच्छा

सोचें और बताएँ

1. सरस बनने के लिए किससे निवेदन किया गया है ?
2. देश के तन और मन को क्या बनने के लिए कहा गया है ?
3. वन और बाट कैसे होने चाहिए ?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

(भाई–बहन, सरस, इच्छा, फल)

(क) हवा देश की देश के ..... ।

(ख) सरस बनें प्रभु ..... बनें।

(ग) देश के घर के ..... ।

(घ) देश की ....., देश की आशा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. देश की माटी व जल कैसे होने चाहिए ?
2. किस–किस को विमल बनने के लिए कहा गया है ?
3. देश की भाषा और देश की शक्ति के लिए क्या कहा गया है ?

भाषा की बात

- **नीचे कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थ वाले शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें रेखा खींचकर मिलाएँ–**

आशा	अनिच्छा
इच्छा	निराशा
शक्तिशाली	विदेश
देश	नीरस
सरस	कमजोर

- **नीचे लिखे शब्दों से खाली जगह भरकर कहानी बनाइए तथा पढ़िए–**

कौआ, कम पानी, घड़ा, प्यासा, ऊपर आया, प्यास बुझ गई, कंकड़, पानी पीया

एक ..... था। वह ..... था। उसने ..... देखा। घड़े में ..... था। उसने ..... डाले। पानी ..... । कौए ने ..... । उसकी ..... ।

यह भी करें

- इस कविता को हाव–भाव के साथ अपनी कक्षा में सुनाइए।
- चित्र पूरा कर रंग भरिए–

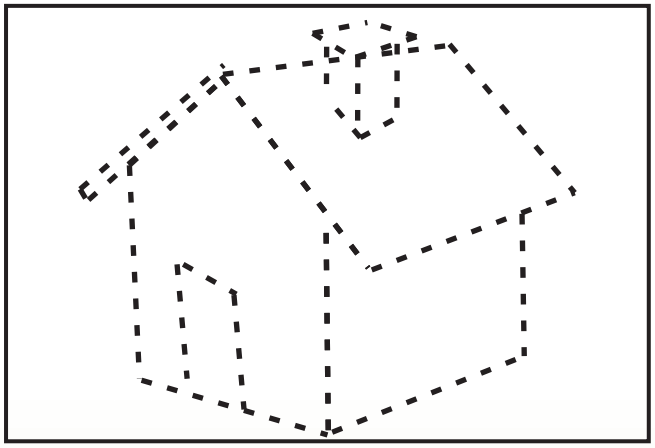

हँसिए–पिता पुत्र से – आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?
पुत्र – कल स्कूल में हमें तोला गया था, आज कहीं बेच न दें; यह सोचकर मैं स्कूल नहीं गया।

2 मीठे बोल

एक खरगोश था। वह घूमता हुआ बाज़ार में पहुँचा। उसकी नज़र गुड़ की भेलियों पर पड़ी। वह सोचने लगा, ''कितना अच्छा हो मुझे थोड़ा गुड़ खाने को मिल जाए, पर कैसे ? चुरा लूँ। नहीं, नहीं। चोरी करना बुरी बात है क्यों नहीं दुकानदार से माँग लूँ ? वह जरूर गुड़ दे देगा।'' वह दुकानदार के पास गया और बोला, ''आप दयालु हैं। दानी हैं। जीवों पर दया करते हैं। आपका कारोबार बढ़े। क्या आप मुझे थोड़ा गुड़ देंगे ?''

खरगोश की बात सुनकर दुकानदार खुश हो गया। उसने उसे गुड़ दे दिया। खरगोश खुशी से उछलता हुआ जंगल की तरफ भागा। वह पेड़ के नीचे बैठकर गुड़ खाने लगा।

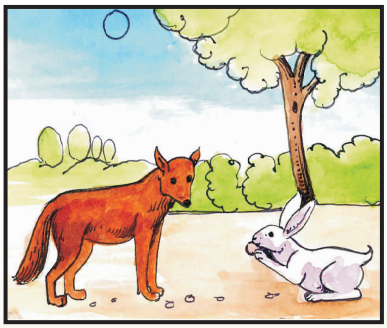

इतने में एक लोमड़ी वहाँ आई। उसको देखकर खरगोश ने गुड़ छिपा लिया। लोमड़ी बहुत चालाक थी। उसने गुड़ को देख लिया था। वह बोली, ''तुम गुड़ कहाँ से लाए ? बताओ, नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगी।''

खरगोश ने कहा, ''मुझे मत मारो। मैं बताता हूँ। बाजार में एक दुकान पर खूब सारा गुड़ रखा है। तुम वहाँ जाना। दुकानदार से माँग लेना। वह तुम्हें भी गुड़ दे देगा।''

लोमड़ी बोली ,"अब चुप रहो मुझे ज्यादा मत समझाओ ।"

लोमड़ी बाजार की तरफ चल दी। उसने गुड़ का ढेर देखा। गुड़ देखकर सोचने लगी। खरगोश तो मूर्ख है। थोड़ा सा गुड़ लेकर वह खुश हो गया लेकिन मैं उसकी तरह निर्बल नहीं हूँ। दुकानदार को धमकाकर ही बहुत सारा गुड़ ले लूँगी।

वह दुकानदार के पास गई और अकड़कर बोली, ''दुकानदार, तुम बेईमान हो, सामान कम तोलते हो, मिलावट करते हो। मुझे गुड़ की भेली दो, नहीं तो मैं तुम्हारी शिकायत करूँगी।''

दुकानदार सोचने लगा, यह लोमड़ी धूर्त है, मुझे धमकी दे रही है। डरा कर गुड़ माँगती है। अभी मजा चखाता हूँ। वह बोला, ''बैठो, बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ।'' लोमड़ी खुश हो गई।

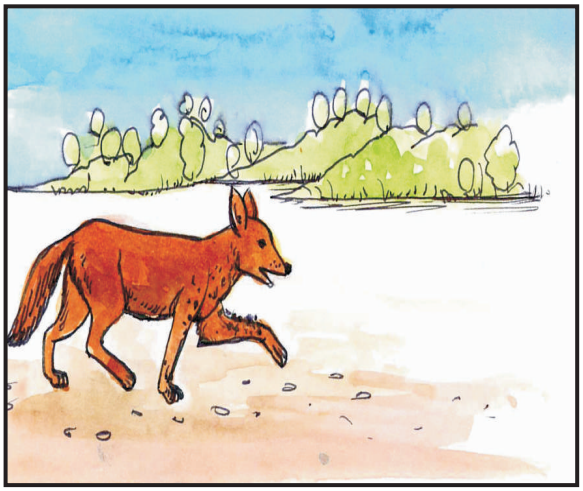

दुकानदार अंदर गया। उसने गुड़ का बोरा देखा, जिसमें बहुत सारे चींटे थे। वह उसे उठा लाया और लोमड़ी से बोला, ''लो, इसमें से चाहे जितना गुड़ ले लो।''

लोमड़ी ने झट से बोरे में पंजा डाला। पंजा डालते ही चींटे उसके पंजे पर चिपक गए और काटने लगे। उसने झट से अपना पंजा खींचा और जोर– जोर से जमीन पर पटकने लगी। पटकने से पंजे पर चोट लग रही थी। दर्द भी होने लगा, पर चींटे नहीं छूटे।

वह जंगल की ओर भागते हुए चिल्लाई, ''नहीं चाहिए तेरा गुड़। तेरा गुड़ तो खारा है।

मीठे बोल, होते अनमोल

निर्देश – बालकों को पात्र बनाकर इस कहानी का अभिनय कराएँ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

दयालु	–	दया करने वाला
दानी	–	दान करने वाला
कारोबार	–	कार्य, व्यापार
निर्बल	–	कमजोर
धूर्त	–	चालाक
अकड़ना	–	घमंड करना

उच्चारण के लिए

निर्बल, धूर्त, दर्द, अकड़कर, अंदर, चींटे, मूर्ख, शिकायत

सोचें और बताएँ

1. खरगोश को गुड़ खाते हुए किसने देखा ?
2. लोमड़ी बाजार की तरफ क्यों गई ?
3. दुकानदार ने लोमड़ी के बारे में क्या सोचा ?

लिखें

नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

(जंगल, धूर्त, निर्बल, मूर्ख)

(क) मैं उसकी तरह ..... नहीं हूँ।

(ख) यह लोमड़ी ..... है।

(ग) वह .....की ओर भागते हुए चिल्लाई।

(घ) खरगोश तो ..... है।

किसने कहा, लिखिए–

(क) आप बहुत दयालु हैं। .....

(ख) मैं निर्बल नहीं हूँ। .....

(ग) बैठो–बैठो, मैं तुम्हें गुड़ देता हूँ। .....

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. खरगोश ने गुड़ की भेलियों को देखकर क्या सोचा ?
2. लोमड़ी की बातें सुनकर दुकानदार ने क्या किया ?

भाषा की बात

- पाठ में धूर्त, मूर्ख आदि शब्द आए हैं; ऐसे शब्दों पर 'र' वर्ण का हलन्त रूप 'र्' आगे वाले वर्ण पर रूप बदल कर लिखा जाता है। आप भी ऐसे शब्द लिखिए–

  जैसे–द + र् + द = दर्द

  ....

- नीचे दिए खानों में कुछ जानवरों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखिए–

कु	भैं	त्ता	स
बि	या	ल्ली	क
गा	बै	य	ल
ब	स	क	री

....

....

....

....

यह भी करें

- कहानी याद करें और कक्षा में सुनाएँ।
- लोमड़ी के स्थान पर आप होते तो क्या करते ? लिखिए।

हँसिए

मोहन – बता मेरी जेब में कितने सिक्के हैं?

सोहन – अगर मैंने सही बता दिया तो एक सिक्का मुझे दोगे?

मोहन – अरे, बता तो सही, मैं दोनों ही दे दूँगा।

पढ़ने के लिए

बड़ा बनने की कला

स्वामी रामतीर्थ सन्न्यास लेने से पूर्व तीर्थराम थे। वह लाहौर के एक कॉलेज में गणित के प्राध्यापक थे। एक बार श्यामपट्ट पर उन्होंने एक रेखा खींची और विद्यार्थियों से पूछा, ''क्या कोई इस रेखा को मिटाए बिना छोटी कर सकता है ?''

कक्षा में सन्नाटा छा गया। तभी एक विद्यार्थी उठा। उसने उस रेखा के पास एक बड़ी रेखा खींच दी। पहली रेखा अपने आप छोटी हो गई।

प्राध्यापक तीर्थराम प्रसन्न हुए। बोले, ''हमारे जीवन का भी यह रहस्य है। अगर तुम बड़े बनना चाहते हो तो बड़े बन जाने वाले व्यक्तियों को पीछे मत धकेलो, अपने आपको उनसे बड़ा बनाओ। वे तुम से छोटे हो जाएँगे।''

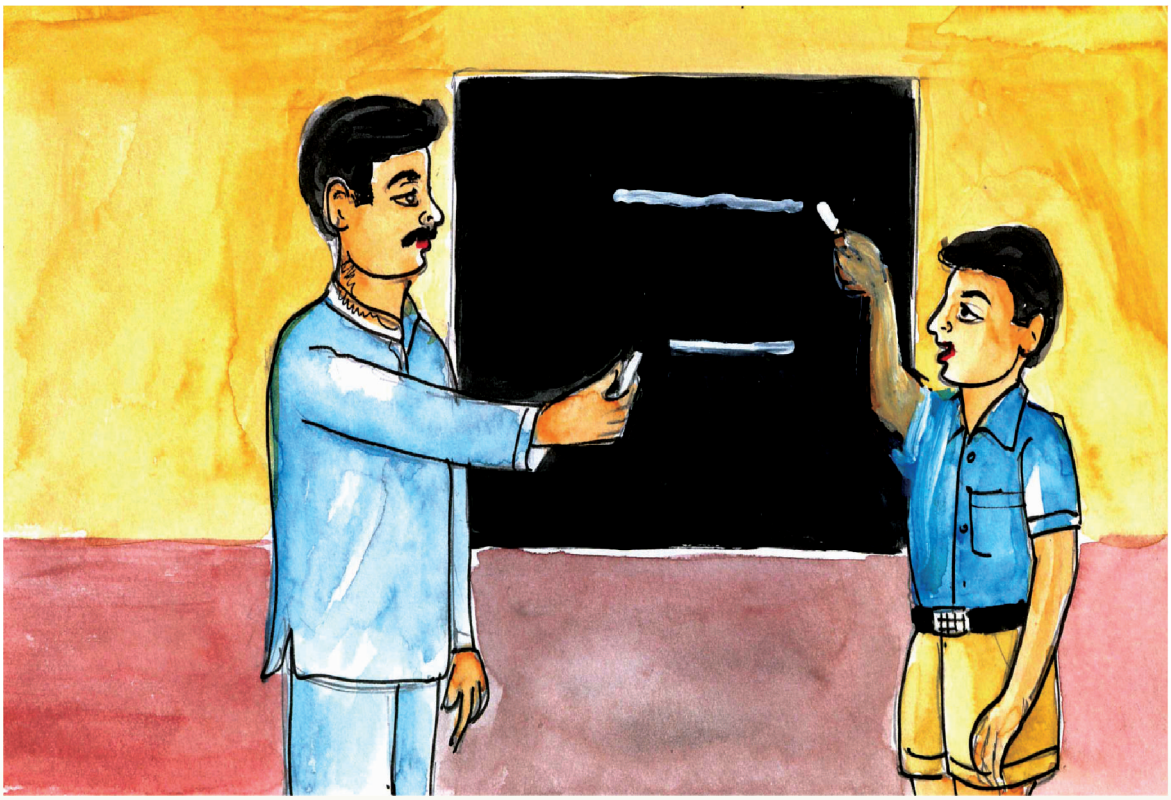

3 हमें जलाशय लगते प्यारे

हमें जलाशय लगते प्यारे,
ये सब जीवन के रखवारे।
बादल अमृत–जल भर लाते,
पोखर, झीलें या हो ताल।
जहाँ लबालब ये मिलते हैं,
वहाँ न होता कभी अकाल।
ये सुकाल के सेतु इनसे,
सबके हैं वारे – न्यारे ।
हमें जलाशय लगते प्यारे।।

कोई जल की पूजा करते,
करने आते वजू नमाजी।
कोई संध्या, तर्पण, व्रत कर,
तैराते हैं दीप–जहाजी।।
धर्म – आस्था को ये धारे,
जीवन हँसता द्वारे–द्वारे।
हमें जलाशय लगते प्यारे।।
औरों के हित संचित करते,
कभी न पीते अपना पानी।
कूप, बावड़ी, कुई–कुण्ड ये,
इस धरती के अनुपम दानी।।
खुशहाली के ये हरकारे,
पक्षी आते पंख पसारे।
हमें जलाशय लगते प्यारे।।

इनकी रक्षा और सुरक्षा,
हम सबकी है जिम्मेदारी।
इनके रूठे आ सकती हैं,
हर प्राणी पर आफत भारी।।
हैं ये सबके सहज सहारे,
घूँट–घूँट दे सबको तारे।
हमें जलाशय लगते प्यारे।।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

जलाशय	–	तालाब
सबल	–	बलवान
सेतु	–	पुल
संचित	–	इकट्ठा, जमा

उच्चारण करें

संख्या, कुण्ड संचित, अमृत

सोचें और बताएँ

1. बादल क्या भरकर लाते हैं?
2. धरती के अनुपम दानी कौन हैं?
3. जलाशयों की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी है?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति निम्न शब्दों का प्रयोग करते हुए कीजिए–

सबकी, जलाशय, अनुपम, अकाल

1. हमें ..... लगते प्यारे।
2. वहाँ न होता कभी .....।
3. इस धरती के ..... दानी।
4. हम ..... है जिम्मेदारी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. सुकाल कब होता है?
2. हमें जलाशयों की सुरक्षा क्यों करनी चाहिए?
3. आपको पानी कहाँ से प्राप्त होता है? लिखिए।
4. हम पानी की किस प्रकार बचत कर सकते हैं?

भाषा की बात

- **'ता' जोड़कर नए शब्द बनाओ**

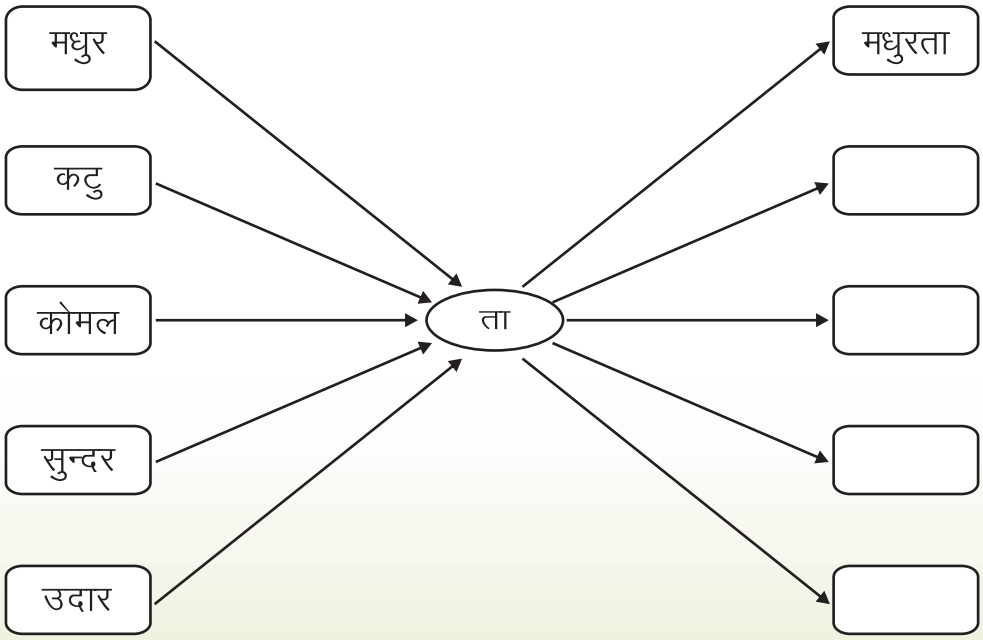

- अकाल का विपरीत शब्द 'सुकाल' है, आप भी निम्नलिखित शब्दों के विपरीत अर्थ देने वाले शब्द लिखिए–

  दिन ..... संध्या .....

  धर्म ..... उजाला .....

- नीचे लिखे वाक्यों में शब्दों का क्रम गड़बड़ा गया है। इनका क्रम ठीक करने में मदद कीजिए–

  1. जलाशय / लगते / प्यारे / हमें .....
  2. बादल / भर / अमृत–जल / लाते। .....
  3. धरती / के / दानी / इस / अनुपम .....
  4. भारी / हर / आफत / प्राणी / पर । .....

- बादल को मेघ, घन, जलद, वारिद आदि नामों से भी जाना जाता है। ये शब्द बादल के पर्यायवाची शब्द हैं। आप भी निम्न शब्दों के दो–दो पर्यायवाची लिखिए –

  जलाशय जल धरती

- पाठ में 'सब' शब्द आया है। इस शब्द को उलट देने पर 'बस' शब्द बन जाता है। अब तुम भी नीचे लिखे शब्दों को उलटकर नए शब्द लिखिए–

  हवा ..... हरा .....

  जग ..... चना .....

  लाना ..... टल .....

यह भी करें

1. आपके आसपास के जलाशयों की सूची बनाइए।
2. आपके इलाके के जलाशयों के उपयोग बताइए।
3. अपनी पसन्द के एक पेड़ का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए।

4 झीलों की नगरी

मैं कंकू हूँ। मैं उदयपुर में रहती हूँ। आइए, आपको मैं झीलों की नगरी उदयपुर के बारे में बताती हूँ। उदयपुर नगर अरावली पर्वतमाला के बीच स्थित है। इस नगर के चारों ओर झीलें ही झीलें हैं। पिछोला, स्वरूपसागर, फतहसागर, उदयसागर, दूधतलाई, जनासागर आदि झीलें। इनके कारण ही तो उदयपुर को झीलों की नगरी कहा जाता है। बरसात की ऋतु में तो इन झीलों की छटा और भी बढ़ जाती है। ये झीलें ही कश्मीर का आभास कराती हैं। अतः इस नगर को राजस्थान का कश्मीर भी कहते हैं।

महल और पिछोला झील

इन झीलों के पानी में ही जगनिवास तथा जगमंदिर नाम के जल महल भी हैं । इन झीलों में पर्यटक नौका विहार का आनंद लेते हैं। रात्रि के समय जब यह उद्यान तथा ये महल विद्युत के प्रकाश में जगमगाते हैं तो इनकी शोभा देखते ही बनती है।

एक विशेष बात यह है कि ये झीलें इस प्रकार बनाई गई हैं कि एक झील का पानी दूसरी झील में आता है; अतः ये झीलें जल संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। फतहसागर के बीच बना है नेहरू उद्यान। इस झील में ही उत्तर की ओर एक सौर वेधशाला (सोलर ऑबजरवेटरी) भी बनी हुई है। इसमें वैज्ञानिकों द्वारा सूर्य की गतिविधियों का अध्ययन किया जाता है।

नेहरू उद्यान

उदयपुर नगर में कई ऐतिहासिक तथा दर्शनीय स्थल हैं। पिछोला झील के किनारे महाराणा प्रताप के वंशजों का भव्य महल है। इसमें काँच का काम तथा चित्रकारी अद्वितीय है। फतहसागर

के किनारे पूर्व की ओर मोती मगरी नाम का प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल है। यहां पर चेतक घोड़े पर सवार महाराणा प्रताप की विशाल प्रतिमा है। उसी परिसर में महाराणा प्रताप के सहयोगी हकीम खाँ सूरी, भामाशाह, भीलूराणा पूंजा, मन्ना, झाला आदि की प्रतिमाएँ भी हैं। ध्वनि–प्रकाश कार्यक्रम के माध्यम से यहाँ मेवाड़ की गौरव गाथा को दर्शाया जाता है। इससे दर्शकों में राष्ट्रप्रेम की भावना का संचार होता है। यहाँ दिन–रात पर्यटकों का आना–जाना बना रहता है।

प्रताप गौरव केन्द्र

फतहसागर के पास ही उत्तर में स्थित एक पहाड़ी पर नीमज माता का सुंदर मंदिर है। यहाँ प्रतिदिन श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है। इस पहाड़ी के पीछे ही 'प्रताप गौरव–केन्द्र' बना हुआ है। यहाँ महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊँची प्रतिमा है। यह प्रताप की सत्तावन वर्ष की आयु में स्वर्गवास होने की याद दिलाती है। यहाँ एक थियेटर भी है। इसमें महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष से जुड़ी एक डाक्यूमेंट्री फिल्म भी दिखाई जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ कुछ अन्य प्रतिमाएँ भी लगी हुई हैं। उनके साथ उनका संक्षिप्त परिचय भी लिखा है। यह एक प्रेरणा स्थल है जहाँ विशाल भारत; गरिमामय राजस्थान तथा गौरवपूर्ण मेवाड़ का दिग्दर्शन होता है।

फतहसागर के पश्चिम में एक पहाड़ी पर सज्जनगढ़ का किला है। इसे महाराणा सज्जन सिंह ने बनवाया था। हाल ही में राजस्थान सरकार द्वारा इस वन्य क्षेत्र को अभयारण्य घोषित किया गया है। इससे आगे कुछ ही दूरी पर पश्चिम में शिल्पग्राम है। यहाँ लोक कलाओं के विकास के लिए कई कार्यक्रम

सज्जनगढ़

आयोजित किए जाते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष दिसम्बर माह में एक मेला लगता है। इसमें देश–विदेश के कई कलाकार अपनी कलाओं का प्रदर्शन करते हैं।

गुलाब बाग में बच्चों की रेल

झीलों की इस नगरी में गुलाब बाग तथा सहेलियों की बाड़ी नाम से दो सुंदर बगीचे हैं। गुलाब बाग में भाँति–भाँति के गुलाब खिलते हैं। इनकी भीनी–भीनी महक से दर्शकों का दिल बाग–बाग हो जाता है। यहाँ एक चिड़ियाघर भी है। रंग–बिरंगी चिड़ियाओं का चहकना सबको आनंदित कर देता है। यहाँ बच्चों की रेलगाड़ी भी है। आप चाहो तो इसमें यात्रा कर सकते हो, किन्तु टिकट लेना मत भूलना ! इसके अलावा यहाँ पहले भालू, शेर, चीते, बंदर आदि भी थे।

सहेलियों की बाड़ी

यहाँ शेर की दहाड़ें सुनी जा सकती थीं । हरिण को कुलाँचे भरते देखकर बच्चे खुश होते थे, किन्तु जब से सज्जनगढ़ को अभयारण्य घोषित किया गया है, सब वन्य प्राणियों को वहाँ स्थानांतरित कर दिया है। सहेलियों की बाड़ी में जब फव्वारे चलते हैं, जन्नत का नजारा लगता है। इन झीलों के किनारे वर्ष में दो बार मेले लगते हैं। हाँ, हरियाली अमावस्या तथा गणगौर के अवसर पर इन मेलों में सारा शहर उमड़ पड़ता है। पास –पड़ौस के लोगों की भीड़ भी जमा हो जाती है और पाँव रखने तक की जगह नहीं मिलती। इन मेलों में यदि आप आओ तो चकरी, डोलर झूलों में जरूर झूलना।

भारतीय लोक कला मण्डल

हाँ, इतिहास प्रसिद्ध इस नगर में 'भारतीय लोककला मण्डल' भी है। यहाँ भी लोक कलाओं के विकास पर योजनाएँ बनाई जाती हैं। इस संस्था की देश– विदेश तक अपनी अनूठी पहचान है। यहाँ कई प्रकार की कठपुतलियाँ हैं। उनका नाच तथा करतब देखकर सभी दर्शक आनंदित हो जाते हैं।

ये सभी इस झीलों की नगरी की साँस्कृतिक धरोहर हैं। यदि आप इन सबका आनंद लेना चाहते हो तो मेरा निवेदन है– पधारो म्हारे देश!

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

वेधशाला	–	ऐसा स्थान जहाँ ग्रहों/नक्षत्रों का अध्ययन किया जाता
ताँता	–	लगातार चलने वाला, क्रम, कतार
दर्शनीय	–	दर्शन करने योग्य
अद्वितीय	–	जिसके जैसा दूसरा न हो/अनोखा/बेजोड़

सोचें और बताएँ

1. उदयपुर नगरी किस पर्वतमाला के मध्य स्थित है?
2. राजस्थान का कश्मीर किसे कहा जाता है?
3. मोती मगरी में चेतक घोड़े के अलावा और किन–किनकी प्रतिमा बनी हुई हैं?

लिखें

नीचे दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

(वेधशाला, नेहरूपार्क, महाराणा सज्जन सिंह)

(अ) फतहसागर झील के उत्तर की ओर एक ..... बनी है।

(ब) सज्जनगढ़ को ..... ने बनवाया था।

(स) फतहसागर के बीच ..... बना है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. उदयपुर को झीलों की नगरी क्यों कहते हैं ?
2. उदयपुर के दर्शनीय स्थल कौन–कौनसे हैं ?
3. प्रताप गौरव केन्द्र का परिचय दीजिए।

भाषा की बात

- **पढ़िए, समझिए** और **खाली जगह भरिए–**

गतिविधि	–	गतिविधियाँ
चिट्ठी	–	.....
बकरी	–	.....
कठपुतली	–	.....

- **शब्दों को मिलाकर पढ़िए और वाक्यों को लिखिए–**

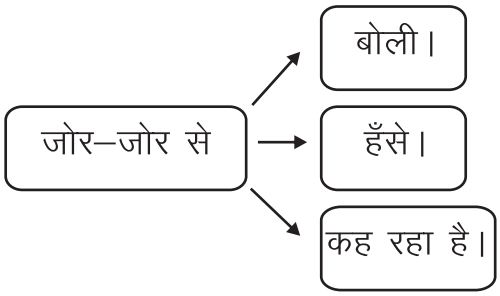

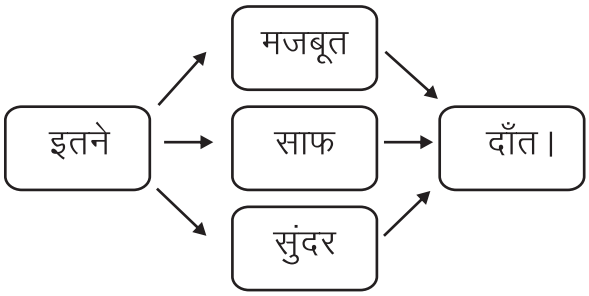

जोर–जोर से बोली।

.....

.....

.....

.....

.....

- 'बगीचा सुन्दर है' वाक्य में 'सुन्दर' शब्द बगीचे की विशेषता बतला रहा है। वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं, 'विशेषण' कहलाते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में से आप भी विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखिए –

	वाक्य	विशेषण
1.	मोटी–मोटी रोटियाँ।	.....
2.	काला कपड़ा।	.....

3. छोटे–छोटे गिलास। .....

4. बहुत सारा दूध। .....

यह भी करें

चित्र को देखकर तीन–चार वाक्य लिखिए –

.....

.....

.....

.....

.....

5 आज मेरी छुट्टी है

सूर्य अपनी तेज किरणों से जल को बादल बना देता है। बादल वर्षा करते हैं। वर्षा की बूँदों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो क्या बनता है? पढ़कर देखें।

बच्चे : अरे ! आज यह क्या हो गया ! आसमान पर बादल भी नहीं हैं। आज फिर सूर्यदेव मुँह छुपाकर कहाँ भाग गए। बिलकुल अँधेरा हो गया है।

मोहित : मेरी दादी माँ कह रही थी कि आज सूर्य–ग्रहण लगेगा। विद्यालय मत जाओ, छुट्टी ले लो।

सूर्य ग्रहण

सूर्य : अरे! सब छुट्टी लेते हो, कभी त्योहारों की, कभी गरमियों की, कभी सरदियों की।

मैंने एक दिन थोड़ी देर की छुट्टी ली तो इतना कोलाहल क्यों ?

आर्यन : सूर्य जी, जब बादल आते हैं तब भी आप छुट्टी पर ही रहते हैं।

सूर्य : न–न–न ! तब तो बादल मुझे ढक लेते हैं। मैं तो अपना काम करता ही रहता हूँ।

मान्या : काम ! आप क्या काम करते हैं ज़रा हमें बतला दीजिए।

सूर्य : वाह ! तुम्हें इतना भी नहीं पता ? मैं ही तो बादल लाता हूँ। अपनी तेज किरणों से तालाब, नदियों ,समुद्रों का जल सुखाकर भाप बनाता हूँ जो ऊपर की ठंडक से बादल बन जाते हैं। यही बादल फिर वर्षा लाते हैं। क्या यह काम नहीं है ? और हाँ, वर्षा के दिनों में इंद्रधनुष देखा है कभी?

आर्यन : हाँ–हाँ, क्यों नहीं! जरूर देखा है। हमें इंद्रधनुष बहुत सुंदर लगता है। सात रंग होते हैं उसमें!

सूर्य : तब तो तुम्हें यह भी मालूम होगा कि इंद्रधनुष में रंग भरने का काम तो मेरा ही है।

मान्या : भला कैसे ?

सूर्य : देखो, पानी की बूँदों से जब मेरी किरणें गुजरती हैं तो मैं अपने प्रकाश से उनमें सातों रंग बिखेर देता हूँ। उन्हीं रंगों से तो वह सुंदर हो जाता है। ज़रा बिना रंगों के बनाकर देखो , कितना फीका लगता है!

आर्यन : वाह! यह तो आपने नई बात बताई। सात रंगों के नाम क्रम से आते हैं–लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला, बैंगनी। मैं अभी रंग भर देता हूँ इस इंद्रधनुष में!

सूर्य : ये तो हुए ऊपर से नीचे आते रंग! अब नीचे से ऊपर जाते रंगों के नाम भी बोलो।

आर्यन : बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल हैं न सही! सूर्य जी, मैंने अपनी पुस्तक में पढ़ा थे और रंग भी भरे थे।

मान्या : मुझे इंद्रधनुष के रंगों के नाम नहीं आते।

आर्यन : तुम मेरे रंग ले लो और इस इंद्रधनुष में भर दो। तुम्हें नाम भी आ जाएँगे और इंद्रधनुष भी सज जाएगा। उधर देखो, सूर्यदेव सामने आ रहे हैं, लगता है उनकी छुट्टी समाप्त हो गई है। सुनो घंटी बज रही है–टन–टन, टन–टन।

इन्द्रधनुष

मान्या : भैया! ज़रा सूर्यदेव का अपना रंग तो देखो ! बिलकुल लाल है। आकाश कितना सुंदर लग रहा है। ऐसा लगता है मानो किसी चित्रकार ने चित्र बना दिया हो।

आर्यन : संध्या हो गई है। सूर्यजी अपने घर जाने की तैयारी में हैं। ये अपना कुछ प्रकाश चंद्रमा को देकर घर जाएँगे। चलो, हम भी चलें।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

सूर्यास्त – सूर्य का अस्त होना

संध्या – शाम का समय।

कोलाहल – शोर, हो हल्ला।

उच्चारण करें

संध्या, प्रकाश, इन्द्रधनुष, समुद्र, सूर्यदेव, चन्द्रमा

सोचें और बताएँ

1. सूरज को कौन ढक लेता है ?
2. दिन में अंधेरा क्यों छा गया ?
3. वर्षा कैसे होती है ?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बादल आने पर सूर्य ..... जाता है।
2. सूर्य हमें ..... देता।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. इन्द्रधनुष में कितने रंग होते हैं? नाम लिखिए।
2. सूरज क्या–क्या काम करता है?

किसने, किसको कहा, लिखिए–

कथन	किसने	किससे
(क) काम! आप क्या काम करते हैं; जरा हमें बतला दीजिए।		
(ख) तब तो तुम्हें यह भी मालूम होगा कि इन्द्रधनुष में रंग भरने का काम तो मेरा ही है।		
(ग) ये तो हुए ऊपर से नीचे आते रंग !		
(घ) मुझे इन्द्रधनुष के रंगों के नाम नहीं आते।		

भाषा की बात

- **नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

पशु–पक्षियों का एक झुंड था। झुंड में ऊँट और तोता पक्के मित्र थे। ऊँट बोला– ''मित्र ! बहुत दिन हो गए ककड़ियाँ नहीं खाईं। कच्ची–कच्ची ककड़ियाँ खाने चलें।'' तोता बोला–''चलें तो सही; पर खेत का रक्षक माँगीराम चौकन्ना खड़ा होगा।'' ऊँट बोला–''देखा जाएगा। मित्र चलें तो।'' दोनों हिम्मत करके खेत में घुस गए। ककड़ियाँ और तरबूज खूब खाए। खेत सफाचट कर दिया।

(अ) ऊँट का पक्का मित्र कौन था ?

(ब) ककड़ियाँ खाने को चलने के लिए किसने किससे कहा?

(स) तोते को किसका डर था ?

(द) अनुच्छेद में से अर्द्ध वर्णों से मिलकर बनने वाले शब्दों को छाँटकर लिखिए–

जैसे–कच्ची

....

- नीचे दिए गए वर्ग में खाने की आठ चीजों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूँढ़कर लिखिए–

ध	ज	चा	व	ल
ह	ले	ह	ल	वा
च	बी	दा	खी	र
ट	प	ल	पू	री
नी	क	खि	च	ड़ी

खीर .....

....

....

....

यह भी करें

- ''बै नी आ ह पी ना ला' दिए गए अक्षरों से शुरू होने वाले रंगों के नाम लिखिए।
- इन्द्रधनुष का चित्र बनाकर उसमें रंग भरिए –

चित्रकथा

एक साथ
तीन सुख

तीन यात्री किसी शहर में से जा रहे थे। तभी एक सिक्का दिखाई दिया।
अहा, सिक्का!

हम सबने इसे एक साथ देखा इसलिए यह हम सबका है।
हाँ, हाँ क्यों न हम कुछ खरीदकर आपस में बाँट लें।
ठीक है! पर क्या खरीदें?
मेरा तो मन मीठी चीज़ खाने का कर रहा है।
ठीक है! पर कई मीठी चीज़ें खरीदेंगे।
पर मुझे तो प्यास बुझाने के लिए कुछ चाहिए।

एक मिठाई ही बहुत है।
मुझे तो कई चाहिए।
मुझे प्यास लगी है।
क्या बात है? आप लोग झगड़ क्यों रहे हैं?
तीनों ने बूढ़े को समस्या बताई।
अरे, बस इतनी सी बात! बड़ा आसान सा उपाय है।
कुछ अंगूर खरीद लीजिए।
ये तो मीठे हैं!
ये तो बहुत सारे हैं।
ये मेरी प्यास बुझाएँगे।
उस बुजुर्ग ने हमारी समस्या बड़ी आसानी से हल कर दी।

6 किताबें

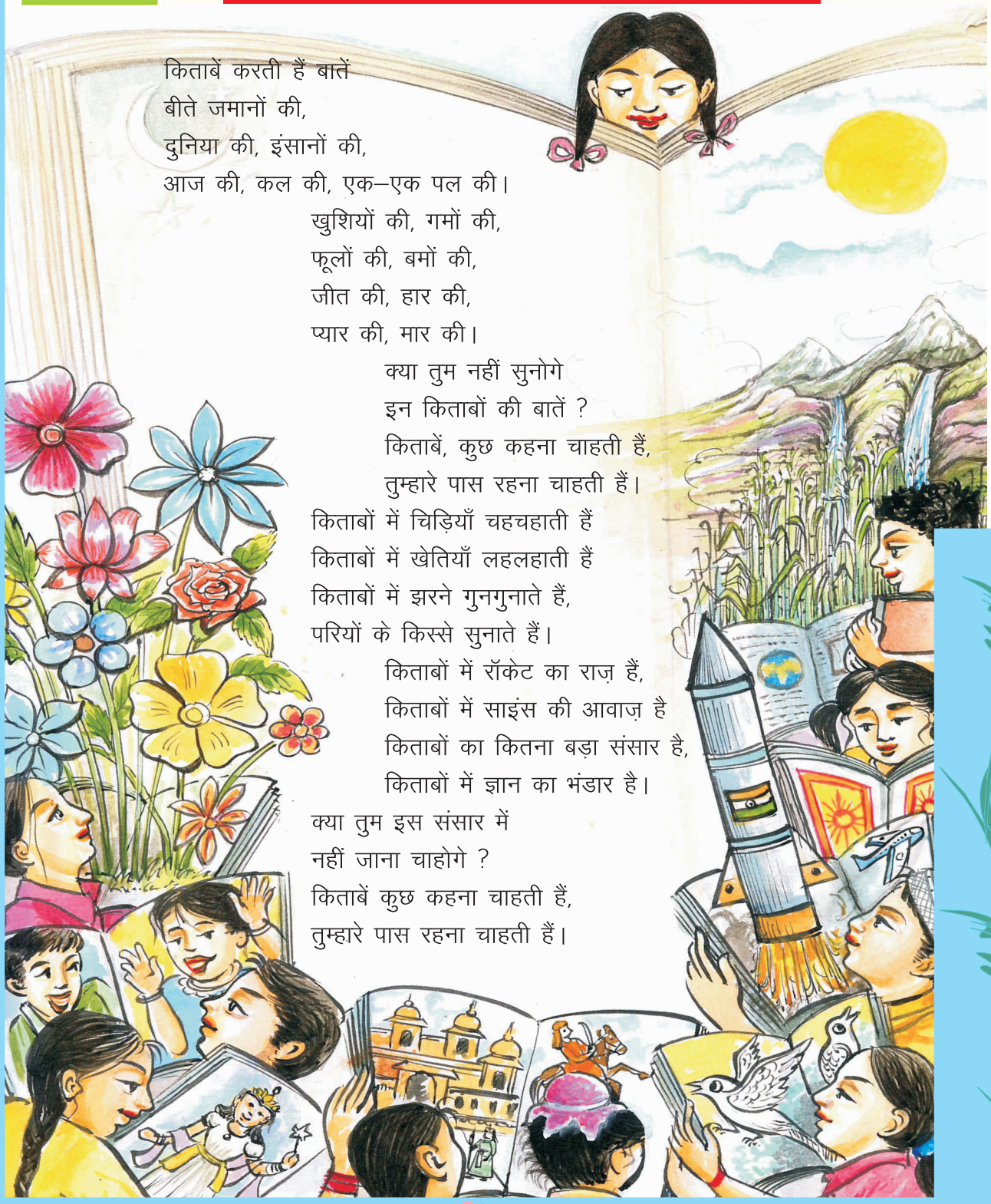

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की,
दुनिया की, इंसानों की,
आज की, कल की, एक–एक पल की।
खुशियों की, गमों की,
फूलों की, बमों की,
जीत की, हार की,
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं,
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं,
परियों के किस्से सुनाते हैं।
किताबों में रॉकेट का राज़ हैं,
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है,
किताबों में ज्ञान का भंडार है।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं,
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

ज़माना	–	काल, युग
राज़	–	रहस्य, भेद
इंसान	–	मनुष्य
सांइस	–	विज्ञान

सोचें और बताएँ

1. किताबें किन–किन की बातें करती हैं ?
2. किताबों में किसका राज़ छुपा है ?
3. किताबें क्या चाहती हैं ?

लिखें

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. किताबें ..... चाहती हैं।
2. किताबों में ..... की आवाज है।
3. किताबों में ..... का भंडार है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. किताबों से तुम्हें किन–किन बातों की जानकारी मिलती है ?
2. किताबें जमाने की व इंसानों की बातें कैसे करती हैं ?
3. यदि किताबें नहीं होती तो क्या होता? अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

- **इनकी आवाज को नाम दो –**

(अ)	चिड़िया के बोलने की	–	चहचहाट
(ब)	पत्तों के हिलने की	–	.....
(स)	बादल के गरजने की	–	.....

- एक किताब के लिए 'किताब ' शब्द का प्रयोग किया जाता हैं एवं एक से अधिक के लिए 'किताबें 'शब्द काम आता हैं; जो शब्द एक से अधिक संख्या का बोध कराते हैं; उन्हें बहुवचन शब्द कहते हैं; जैसे–एकवचन–किताब बहुवचन–किताबें।

आप भी पाठ में आए शब्दों के वचन बदलकर लिखिए–

इंसानों	इंसान
फूलों	.....
झरने	.....
परी	.....
आवाज	.....
बात	.....

यह भी करें

- इस कविता को याद कर अपनी प्रार्थना सभा में सुनाइए।
- आपके घर पर कौन–कौनसी किताबें है? सूची बनाइए।

7 नारी शक्ति की प्रतीक–भगिनी निवेदिता

देश की बहुत कुछ कर गुजरने वाली महिलाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है, परन्तु एक विदेशी महिला ने भारत के लिए जो कार्य किया, वह अनूठा है। भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित होकर उनके आह्वान पर भारत की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए भारत आई थीं। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी मातृभूमि के दर्शन किए और भारत की बेटी बनकर स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उनके पिता का नाम 'सेमुअल रिचमण्ड़ नोबेल' व माँ का नाम 'मैरी इसाबेला' था। बचपन में ही इनके माता–पिता का देहांत हो गया था। इनका लालन–पालन नाना हमिल्टन द्वारा किया गया था। हमिल्टन आयरलैण्ड के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे। मार्गेट की शिक्षा लंदन चर्च के आवासीय विद्यालय में हुई।

मार्गेट को शिक्षण का कार्य अच्छा लगता था। अतः वे 17 वर्ष की उम्र में ही एक विद्यालय में पढ़ाने लगी। वे स्वयं द्वारा विकसित पद्धति से शिक्षा दिया करती थीं। धर्म में रुचि होने के कारण वे चर्च की गतिविधियों में भी भाग लेती थीं तथा अधिकांश समय अध्ययन, मनन एवं सत्य की खोज में ही लगाती थीं ।

तभी एक घटना घटी, जो उनके जीवन को एक नया मोड़ देने वाली थी। एक संन्यासी का लंदन में आगमन हुआ। नाम था 'स्वामी विवेकानन्द'। स्वामी जी शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में ख्याति अर्जित कर अपने कुछ मित्रों के आग्रह पर इंग्लैण्ड आए थे। मार्गेट की स्वामी जी से प्रथम भेंट यहीं हुई थी।

मार्गेट ने स्वामी जी के प्रवचन सुने, वाद–विवाद, तर्क–वितर्क किया और अपने आपको पूर्ण संतुष्ट कर लेने के उपरांत ही उन्होंने स्वामी जी को अपना आदर्श चुना तब स्वामी जी के आग्रह पर उसने भारत आना तय कर लिया।

भारत आकर वो अत्यधिक प्रसन्न हुई। वह गंगा के किनारे वेल्लूर मठ की एक कुटिया में दो अन्य अमेरिकन महिलाओं के साथ रहने लगीं जो स्वामी जी की शिष्याएँ थीं। स्वामी जी ने मार्गेट को नया नाम निवेदिता दिया और आग्रह किया कि वह भगवान व भारत माता के चरणों में अपना जीवन अर्पित करें।

भगिनी निवेदिता ने विवेकानन्द के उपदेशों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करने के साथ–साथ कोलकाता में लड़कियों का एक स्कूल भी आरम्भ किया। वहाँ छोटी लड़कियों को पढ़ाने लिखाने के साथ–साथ मिट्टी का काम, चित्रकारी का काम आदि भी सिखाया। जब कोलकाता में महामारी फैली तो निवेदिता ने टोली बनाकर दिन–रात भूख–प्यास की चिंता किए बिना रोगियों की चिकित्सा, सेवा–सफाई आदि कार्य कर पीड़ितों की मदद की। उन्होंने अंग्रेजी समाचार पत्रों में अपील प्रसारित कर मदद माँगी व धन संग्रह भी किया। वे लेखन कला एवं बोलने में निपुण थी। इस क्षमता का उपयोग कर वे अपनी बात बड़े–बड़े समूहों तक पहुँचाने में सफल रही।

निवेदिता ने जब अंग्रेजों का भारतीयों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार देखा तो वे पूर्ण ताकत के साथ भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का समर्थन करने लगीं। उन्होंने बंगाल विभाजन का विरोध किया। उन्होंने जगदीश चन्द्र बोस की उपलब्धियाँ विश्व पटल पर रखी और महर्षि अरविन्द के जेल जाने के बाद उनके 'कर्मयोगी' पत्र के लिए संपादकीय लिखने का कार्य भी करने लगी।

उन्हें भारतीय स्त्रियाँ अधिक प्रभावित करती थीं। वे उन्हें लज्जा, विनम्रता, स्वाभिमान, सेवाभाव, निष्ठावान, ममत्व आदि की प्रतिमूर्ति दिखाई देती थीं। वे महिलाओं को लक्ष्मी बाई, अहल्या बाई के वीरतापूर्ण कार्यों की भी याद दिलाया करती थीं। उनकी दृष्टि जाति, प्रांत व भाषा आदि से ऊपर थी।

भगिनी निवेदिता ने भारत को अपनाने के बाद कभी भी यह अनुभव नहीं होने दिया कि वे एक विदेशी हैं। उन्होंने भारत के लिए जो किया उसे कोई अन्य नहीं कर सकता। वह भी स्वामी जी की तरह ही 44 वर्ष की अल्पायु में नीचे उद्धृत वेद की पावन ऋचाओं का स्मरण करती हुई संसार से विदा हो गईं।

असतो मा सद्गमयः तमसो मा ज्योतिर्गमयः मृत्योर्मा अमृतंगमयः।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

आह्वान – पुकार / बुलावा

प्रवचन – उपदेश देना

बर्बरता – क्रूरता

भगिनी – बहन

उच्चारण के लिए

क्रांतिकारी, ख्याति, विनम्रता, स्वाभिमान, प्रतिमूर्ति, निष्ठावान, उद्धृत, ऋचाएँ।

सोचें और बताएँ

1. भगिनी निवेदिता का बचपन का पूरा नाम क्या था?
2. भगिनी निवेदिता का पालन पोषण किसने किया?
3. स्वामी विवेकानन्द ने विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए कहाँ गए?

लिखें

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. भगिनी निवेदिता ने स्वामी विवेकानन्द को अपना आदर्श कब चुना ?
2. भगिनी निवेदिता ने बालिकाओं के लिए क्या–क्या किया ?
3. भगिनी निवेदिता भारतीय स्त्रियों के कौन–कौनसे गुणों से प्रभावित हुईं ?
4. जब कलकत्ता में महामारी फैली तब भगिनी निवेदिता ने रोगियों की किस प्रकार मदद की ?

भाषा की बात

- 'वीरता' और 'पूर्ण' शब्द मिलकर, 'वीरतापूर्ण' शब्द बना। आप भी इस प्रकार 'पूर्ण' जोड़कर नए शब्द बनाएँ–

कायरता ..... बर्बरता .....

स्वतन्त्रता ..... वीरता .....

- भगिनी निवेदिता विवेकानन्द से प्रभावित हो कर भारत आ गई। उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उन्होंने भारतीय महिलाओं को शिक्षित किया।

  उपर्युक्त गद्यांश में 'भगिनी' के स्थान पर 'उनका' 'उन्होंने' शब्द लिखे गए हैं। इन्हें सर्वनाम से जाना जाता है। जो शब्द संज्ञा की जगह प्रयुक्त किए जाते हैं वे सर्वनाम कहलाते हैं। आप भी नीचे लिखे वाक्यों में से सर्वनाम छाँटकर लिखें –

  1. राम बस में बैठा था, वह जयपुर जा रहा था।
  2. किताबों में हमें कहानी अच्छी लगती है।
  3. श्यामू ! तुम कहाँ चले गये थे।
  4. शीला के साथ उसकी बहन भी पढ़ती है।

यह भी करें

- चित्रों को देखकर तीन–चार वाक्य लिखिए –

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- पापा के पापा को दादा कहते हैं; इन्हें आप अपने घर में क्या कहकर बुलाएँगे?

पापा की माँ	.....	माँ के पापा	.....
माँ की माँ	.....	माँ के भाई	.....

पापा की बहन ..... माँ की बहन .....

पापा के छोटे भाई ..... पापा के बडे भाई .....

- मुहावरों को सुनकर मन में एक चित्र–सा बनता है। नीचे दिए गए मुहावरों में किन्हीं दो मुहावरों के चित्र बनाकर रंग भरिए।

दीया तले अँधेरा, ईद का चाँद

मुँह फुलाना तारे तोड़ना।

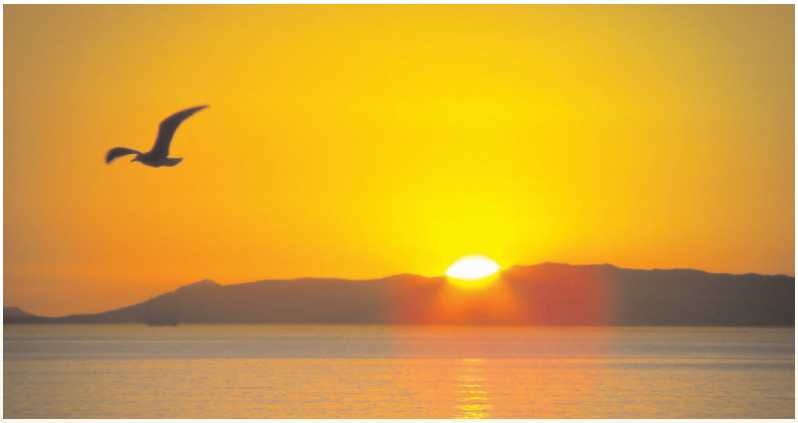

8 हुदहुद

हुदहुद

एक बार सुलेमान नाम के बादशाह आकाश में चलने वाले अपने उड़नखटोले पर बैठकर कहीं जा रहे थे। बडी गर्मी थी। धूप से वह पेरशान हो रहे थे। आकाश में उड़ने वाले गिद्धों से उन्होंने कहा कि अपने पंखों से तुम लोग मेरे सिर पर छाया कर दो। पर गिद्धों ने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्होंने बहाना बनाते हुए कहा, ''हम तो बहुत छोटे हैं। हमारी गर्दन पर पंख भी नहीं है। हम छाया कैसे कर सकते हैं।''

सुलेमान आगे बढ़ गए। कुछ दूर जाने पर उनकी भेंट हुदहुदों के मुखिया से हुई। सुलेमान ने उससे भी मदद माँगी। वह चतुर था। उसने फौरन अपने दल के सभी हुदहुदों को इकट्ठा करके बादशाह सुलेमान के ऊपर छाया कर दी। सुलेमान बोले, ''मैंने गिद्धों से भी मदद माँगी थी। वे मेरी मदद कर सकते थे पर उन्होंने मेरी मदद नहीं की। तुम गिद्धों से छोटे तो हो पर चतुर अधिक हो। तुम सब ने मिलकर मेरी सहायता की है। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हारी कोई इच्छा पूरी करूँगा। बताओं, तुम्हारी क्या इच्छा है ?

मुखिया ने कहा, '' महाराज मैं अपने सभी साथियों से सलाह करने के बाद अपनी इच्छा बताऊँगा।

मुखिया ने साथियों से सलाह करने के बाद कहा, ''महाराज यह वरदान दीजिए कि हमारे सिर पर आज से सोने की कलगी निकल आए।

बादशाह हँसे और बोले – ''मुखिया इसका फल क्या होगा यह तुमने सोच लिया है?''

मुखिया बोला, ''हाँ, महाराज! मैंने खूब परामर्श करके यह वरदान माँगा है।''

सुलेमान ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। सभी हुदहुदों के सिर पर सोने की कलगी निकल आई। लोगों ने सोने की कलगी को देखा, तो वे हुदहुदों के पीछे पड़ गए। तीर से उन्हें मार–मारकर इकट्ठा करने लगे।

हुदहुदों का वंश समाप्त होने पर आ गया। तब मुखिया घबराकर बादशाह सुलेमान के पास पहुँचा और बोला ''इस सोने की कलगी के कारण तो हमारा वंश ही समाप्त हो जाएगा।'' सुलेमान ने कहा, ''मैंने तो शुरू में ही तुम्हें चेतावनी दी थी। खैर, जाओ, आज से तुम्हारे सिर का ताज सोने का नहीं, सुंदर परों का हुआ करेगा, तभी से हुदहुदों के सिर पर परों का ताज (कलगी) शोभा पा रहा है।

हुदहुद एक बहुत ही सुंदर पक्षी है। इसके शरीर का सबसे सुंदर भाग इसके सिर की कलगी होती है। वैसे तो यह इसे समेटे रहता है, पर जैसे ही किसी तरह की आवाज होती है, यह चौकन्ना होकर परों को फैला लेता है। तब यह कलगी देखने में हूबहू किसी सुन्दर पंखी जैसी लगने लगती है।

इसी कलगी के बारे में आपने अभी एक सुन्दर कहानी भी पढ़ी है।

हुदहुद का सारा शरीर रंग–बिरंगा और चटकीला होता है। पंख काले–काले होते हैं जिन पर मोटी सफेद धारियाँ बनी होती है।

हुदहुद

गर्दन का अगला हिस्सा बादामी रंग का होता है। चोटी भी बादामी रंग की होती है। मगर उनके सिरे काले और सफेद होते हैं। दुम का भीतरी हिस्सा सफेद और बाहरी हिस्सा काले रंग का होता है। चोंच पतली, लंबी तथा तीखी होती है। इसकी चोंच नाखून काटने वाली 'नहरनी' से बहुत मिलती है और शायद इसीलिए कहीं–कहीं इसे 'हजामिन' चिड़िया के नाम से भी पुकारते हैं। हुदहुद हमारे देश के सभी भागों में पाए जाते हैं। यह मैना जितना बड़ा होता है और कटफोड़वा जैसा दिखाई देता है।

आपने इसे अपने घर के आसपास अपनी तीखी चोंच से जमीन खोदते हुए अवश्य देखा होगा। बोलते समय यह तीन बार 'हुप–हुप–हुप' सा कुछ कहता है, इसीलिए इसे अंग्रेजी में 'हुप ऊ' कहा जाता है। हिन्दी में से हुदहुद कहते हैं। दूब में कीड़ा ढूँढ़ने के कारण हमारे देश में कहीं–कहीं इसे 'पदुबया' भी कहते हैं और सुन्दर कलगी की वजह से कुछ देशों में लोग इसे 'शाह सुलेमान' कहकर पुकारते हैं।

मादा हुदहुद तीन से दस तक अंडे देती है। जब तक बच्चे अंडे से बाहर नहीं निकल जाते, वह अंडों पर बैठी रहती है, हटती नहीं। नर वहीं भोजन लाकर उसे खिला जाता है। पर दोनों में से कोई भी घोंसले की सफाई नहीं करता। संसार के विख्यात पक्षियों में से एक है यह हुदहुद। यह अपनी सुंदरता के लिए तो मशहूर है पर इसे पालतू नहीं बनाया जा सकता और न ही इसकी बोली में मिठास है।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

उड़नखटोला	–	उड़ने वाला खटोला, विमान
कलगी	–	पक्षियों के सिर पर निकलता हुआ बालों का गुच्छा
चटकीला	–	चमकीला
विख्यात	–	प्रसिद्ध

उच्चारण करो

विख्यात, परामर्श, फौरन, गिद्ध

सोचें और बताएँ

1. बादशाह का क्या नाम था?
2. बादशाह ने गिद्धों से क्या कहा?
3. हुदहुद अपनी कलगी को कब फैलाता है?

लिखें

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. सुलेमान की सहायता किसने की?
2. अंग्रेजी भाषा में हुदहुद को क्या कहते हैं?
3. हुदहुद के मुखिया ने क्या इच्छा प्रकट की?
4. हुदहुदों को किन–किन नामों से जाना जाता है?

भाषा की बात

- विराम का अर्थ है–रुकना । वाक्यों को बोलते व लिखते समय हम बीच–बीच में कुछ विराम लेते हैं, रुकते हैं । इस रुकने के संकेत को विरामचिह्न कहते हैं।

हिन्दी में प्रयोग किए जाने विराम चिह्न कई प्रकार के हैं, जैसे –

विराम चिह्न	संकेत
पूर्णविराम	।
अल्पविराम	,
प्रश्नवाचक	?

आप भी नीचे लिखे वाक्यों में उचित विरामचिह्न लगाकर पुनः लिखिए –

हमारा देश त्योहारों का देश है होली दीपावली रक्षाबंधन ईद क्रिसमस दशहरा आदि त्योहार पूरे भारत में मनाते हैं आप कौनसा त्योहार मनाते हैं

- नीचे की तालिका में पाँच शब्दों के समूह दिए गए हैं, उनमें से जो बेमेल शब्द है उस पर घेरा लगाओ–

1.	हुदहुद	तोता	कबूतर	गाय	चिड़िया
2.	छत	आँगन	बरामदा	कमरा	खेत
3.	चाँद	सूरज	तारे	कोयल	ग्रह
4.	गुलाब	गैंदा	चमेली	बबूल	मोगरा

- नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य पुनः लिखिए –

(क) <u>बच्चा</u> दूध पी रहा है। .....

(ख) माँ <u>रोटी</u> सेक रही हैं। .....

(ग) <u>औरतें</u> गीत गा रही हैं। .....

(घ) <u>गाय</u> घास चर रही है। .....

यह भी कीजिए

- हुदहुद का सारा शरीर रंग–बिरंगा और चटकीला होता है। राम की कमीज हल्के पीले रंग की है। रंग की विशेषता बताने के लिए कुछ शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है; जैसे–हल्का रंग, चटकीले रंग आदि। आगे दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए आप भी वाक्य लिखिए–

फीका	गोविंद की किताब फीके नीले रंग की है।
गहरा	
हल्का	
भड़कीला	
सुनहरा	

- पाठ के आधार पर हुदहुद के बारे में लिखिए –

1. हुदहुद का शरीर .....
2. हुदहुद के सिर की कलगी .....
3. हुदहुद की चोंच .....
4. हुदहुद की बोली .....
5. हुदहुद की भोजन संबंधी आदतें .....

- अपनी पसंद के किसी पक्षी का चित्र बनाकर रंग भरिए–

तीन बन्दर

तीन तीन ये देखो बन्दर,

बैठे तीनों घर के अन्दर।

कान में उँगली डाले एक,

बात करे वह कितनी नेक।

बुरा न सुनना तुम बच्चे,

बन जाना सबसे अच्छे।

दूजा मुँह पर हाथ धरे,

बात किसी से नहीं करें।

बुरा न कहना देखो यार,

इससे मिलता सबको प्यार।

तीजे की हैं आँखें बन्द

अक्ल नहीं पर उसकी मंद।

बुरा न देखो मेरे भाई

इसमें ही हम सबकी भलाई।

पढ़ने के लिए

विलोम शब्द सीढ़ी

100	99	98 पीछे	97	96 रोना	95	94	93	92	91
81	82	83	84 अस्त	85	86	87	88	89	90
80	79	78	77	76 नीचे	75	74	73	72	71
61	62	63 हँसना	64	65	66	67	68	69	70 असत्य
60	59	58	57 मृत्यु	56	55	54	53 आगे	52	51
41 रंक	42	43	44	45 ऊपर	46	47	48	49 जाना	50
40	39	38 दिन	37	36 दुख	35	34 जीवन	33	32	31
21	22 राजा	23	24	25	26	27 हानि	28	29 सत्य	30
20 उदय	19	18	17	16 रात	15	14	13	12	11 आना
1	2	3 सुख	4	5	6	7 लाभ	8	9	10

निर्देश –

चार बालक चारों तरफ़ बैठकर साँप–सीढ़ी की तरह खेल खेलेंगे। यदि एक बालक के पासा फेंकने पर 3 आए तो वह तीन से सीधा सीढ़ी के माध्यम से 36 के घर में गोटी रखेगा व सुख का विलोम शब्द बोलेगा। इसी प्रकार दूसरा बालक पासा फेंकेगा। बालक की गोटी जिस शब्द वाले खाने में आती है वह उस शब्द के विलोम शब्द वाले खाने में अपनी गोटी रखेगा; चाहे वह ऊपर जाए या नीचे। इस प्रकार से आगे–पीछे बढ़ते रहेंगे। जो बालक 100 पर पहले पहुँचेगा; वही विजयी माना जाएगा।